मीडिया महोत्सव, भोपाल

मीडिया महोत्सव - लेखक चौपाल

बिजनेस मॉडल पर नहीं, पाठक को सोचकर लिखें

भोपाल: राजधानी के इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय में चल रहे तीन दिवसीय "मीडिया महोत्सव 2020" में लेखक चौपाल पर चर्चा हुई है। शनिवार को 2:00 से 4:00 के सत्र में देशभर के लेखकों ने अपने-अपने विचार प्रस्तुत किए हैं। मंच का संचालन अनिल सौमित्र ने किया है। इस दौरान सैकड़ों की संख्या में लोग मौजूद रहे।

लेखक चौपाल में प्रो. शंकर शरण, उदय माहूरकर, डा. ब्रजेश राजपूत (ऑफ द स्क्रीन), राजेश सिरोठिया (खबरनवीसी), सतीश एलिया (अन्नं ब्रह्म), डा. कायनात क़ाजी (राहागिरी), आशीष कौल (रिफ्यूजी कैम्प), सचिन जैन, डा. पवन सिंह मालिक (नागरिक पत्रकारिता), अनुज खरे (चिल्लर चिंतन), रामेन्द्र सिन्हा (कर्म योगी), आशुतोष सिंह (अंजुरी भर चाऊर), दयाशंकर मिश्र (जीवन संवाद) इत्यादि जैसे लेखकों ने विचार रखें है।

सत्र के दौरान लेखकों ने कहा की हमें लेखन शैली को विजनेस मॉडल में ना रखकर, बल्कि पाठक को ध्यान में रखकर लिखना चाहिए। जिससे पाठक को लेख पढ़ते समय आत्मीयता का भाव लगे। इसके साथ ही पाठकों के लिए लेखन की उपयोगिता और प्रभाव भी चर्चा हुई है। वहीं डिजिटल मीडिया के बढ़ते प्रयोग का लेखन, प्रकाशन और पठनीयता पर होने वाले प्रभावों पर प्रकाश भी डाला गया है।

मीडिया महोत्सव- कला चौपाल

मीडिया महोत्सव,भोपाल 2020: Media festival 2020:

कला एवं सस्कृति ही भारत को दिलाएगा विश्व गुरु का दर्ज़ा

भोपाल: राजधानी के इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय में तीन दिवसीय मीडिया फेस्टिवल का आयोजन किया गया है। शनिवार को कला चौपाल में संचार संस्कृति एवं कला परंपरा पर चर्चा की गई है। चौपाल का उद्घाटन जनजातीय समुदायों के संरक्षक कपिल तिवारी ने सरस्वती के चित्र पर मालयार्पण करके किया है। चौपाल का संचालन विनय उपाध्याय ने किया और उपस्थिति लोगों के सवालों का भी वक्ताओं ने जवाब दिया है।

समाजसेवी कपिल तिवारी ने जनजाति व आदिवासियों के समूहों की समस्याओं को लोगों के सामने रखा है। इसके साथ ही उन्होंने इनकी प्रति मीडिया की उदासीनता को भी आड़े हाथों लिया है। उन्होंने कहा कि रूस, अमेरिका और ब्रिटेन जैसे देशों में लोक कला नाम की चीज ही नहीं है। भारत को गर्व करना चाहिए कि भारत में विभिन्न प्रकार की परंपरागत संस्कृतिक संचार माध्यम उपलब्ध है। गायककार तोची रैना ने अपने आप को पहचानने की सीख दी और शरीर में जो पांच तत्व हैं, उसके गहन अध्ययन करने की बात कही है।

इसके साथ ही इस कला चौपाल को सरोज सुमन, आलोक चटर्जी, मोहम्मद अली शाह, विम्मी मनोज और रेखा भटनागर ने भी संबोधित किया है। जिसमें दर्शकों से भी सवाल लिए गए और उसका जवाब संबंधित वक्ताओं ने दिया है। इस दौरान एंकर, पत्रकार, समाजसेवी, एनजीओ कार्यकर्ता, यूनिवर्सिटी में अध्ययनरत विद्यार्थी, प्रशासनिक अधिकारी, पत्रकारिता के छात्रों सहित सैकड़ों की संख्या में लोग मौजूद रहे हैं।

मीडिया महोत्सव- डिजिटल मीडिया चौपाल

डिजिटल मीडिया का कानून बनना चाहिए, तभी रुकेगा इसका दुरुपयोग

- मीडिया महोत्सव के दौरान हुई डिजिटल मीडिया चौपाल में वक्ताओं ने रखी अपनी बात

भोपाल। मीडिया महोत्सव- 2020 के दूसरे दिन डिजिटल मीडिया चौपाल का आयोजन किया गया। इस दौरान मंच पर मौजूद वक्ताओं ने अपनी-अपनी बात रखी। ज्यादातर सवाल सोशल मीडिया के दुरुपयोग को लेकर सामने आए। इसमें सभी ने मिलकर डिजिटल कानून बनाने की बात पुरजोर तरीके से उठाई।

अमर उजाला डिजिटल के जयदीप कार्णिक ने कहा कि डिजिटल और सोशल मीडिया का सामाजिक और मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ा है। सोशल मीडिया ने हम सभी को पूरी तरह से जकड़ लिया है। वह 24 घंटे हमारे साथ रहता है। उन्होंने कहा कि कोई भी नई तकनीक जब आती है तो उसका सकारत्मक और नकारात्मक दोनों ही तरह के प्रभाव पड़ते हैं। भास्कर डिजिटल के अनुज खरे ने कहा कि आप अपने सोशल मीडिया पर तो असली होते हैं, लेकिन क्या आप अपने अलावा अन्य सोशल मीडिया पर भी सही होते हैं? उन्होंने कहा कि हमें सोशल मीडिया पर कोई भी सामग्री देने से पहले उसका पूरी तरह से परीक्षण करना चाहिए, लेकिन हम ऐसा नहीं करते हैं। कोई भी सामग्री आई और हम उसे तुरंत आगे बढ़ा देते हैं। उन्होंने कहा कि आज डिजिटल के लिए कानून की सख्त जरूरत है, तभी इसका दुरुपयोग रुक सकेगा। उन्होंने कहा कि फेसबुक दुनिया की सबसे बड़ी मीडिया कंपनी बनना चाहती थी, लेकिन वह अपनी विश्वसनीयता कायम नहीं रख सका और इसलिए उसका सबसे बड़ी मीडिया कंपनी बनने का सपना पूरा नहीं हुआ। आम आदमी पार्टी के अंकित लाल ने कहा कि डिजिटल के नियम-क़ानून में हम बहुत पीछे चल रहे हैं। हमें अब इसके कानून की तरफ कदम उठाना चहिए, ताकि इसके दुरुपयोग को रोक सके।

आशीष खंडेलवाल ने कहा कि सोशल मीडिया से बड़ा तबका जुड़ा हुआ है। सोशल मीडिया के माध्यम से वह अपनी बात सरकार एवं उचित प्लेटफार्म तक पहुँचा सकता है। ये प्लेटफार्म ऐसे लोगों के लिए एकदम उचित है।

सुभ्रांशु चौधरी ने कहा कि भारत को अपना खुद का डिजिटल मीडिया भी बनाना पड़ेगा। अमेरिका में 95 प्रतिशत लोग सोशल मीडिया एवं डिजिटल मीडिया से जुड़े हैं, लेकिन हमारे यहाँ सिर्फ 45 प्रतिशत लोग ही जुड़े हैं। उन्होंने कहा कि आगे की लड़ाई सायबर लड़ाई होगी। इसी तरह विकास पांडेय, जितेश जैन, संदीप पाल ने भी अपनी बात रखी।

खुला सत्र में हुए परिचय-

इससे पहले खुला सत्र आयोजित किया गया। इस दौरान सभी लोगों ने अपना-अपना परिचय दिया।
संपादक विचारों को प्रतिपादित करने वाली संस्था है: राजेंद्र शर्मा
- पत्रकार और पत्रकारिता पर विश्वसनीयता का संकट है

- संपादक चौपाल में वरिष्ठ वक्ताओं नेे रखी बात, कहा- मीडिया हुई है दुर्दशा का शिकार

भोपाल। पत्रकारिता के क्षेत्र में आने वाला प्रत्येक व्यक्ति विशिष्ठ है, क्योंकि उसकी आत्मा जिंदा है। पत्रकारिता में भी समय के साथ-साथ कई परिवर्तन देखने को मिले हैं, लेकिन पत्रकारिता का अपना स्थान हमेशा से कायम था और आगे भी रहेगा। संपादक विचारोेंं को प्रतिपादित करने वाली संस्था है। ये बातें वरिष्ठ विचारक एवं स्वदेश समाचार पत्र के समूह संपादक राजेंद्र शर्मा ने कही।

मानव संग्रहालय में चल रहे मीडिया महोत्सव के अंतिम दिन संपादक चौपाल में कई वरिष्ठ संपादकोेंं ने अपने विचार व्यक्त किए। वरिष्ठ संपादक राजेेंद्र शर्मा ने कहा कि गौरव ज्ञान उचित है, किंतु पुरानी ही परपंराओं का अनुसरण हो यह बिल्कुल भी उचित नहीं है। उन्होंने कहा कि भारत समृद्ध इसीलिए रहा कि हमने किसी को बांधकर नहीं रखा। भारत ने दुनिया के सर्वश्रेष्ठ विचारों का हमेशा से स्वागत किया है। प्रलय से ही सृष्टि निर्माण की संभावना हमारे विचारों में है। उन्होंने कहा कि परिवर्तन समाज में व्यक्तियों में गुणों का संचार करता है। इस दौरान उन्होंने भगवान श्रीराम और श्रीकृष्णा के उदाहरण भी प्रस्तुत किए।

संपादकों का अस्तित्व खतरे में है: एन के सिंह

आज संपादकों के अस्तित्व पर ही खतरा मंडरा रहा है। ये पत्रकारिता के लिए बेहद खतरनाक है। आज की पत्रकारिता पूरी तरह से बाजारवाद पर आकर टिक गई है। हालांकि पहले के दौर में भी कई बार संपादकों को अपना अस्तित्व बचाना पड़ा है, लेकिन वर्तमान दौर में पूरी तरह से खतरा है। ये बातें वरिष्ठ पत्रकार एवं दैनिक भास्कर, टाइम्स आफ इंडिया सहित कई समाचार पत्रों में संपादक रह चुके एनके सिंह ने कही। उन्होंने कहा कि मीसाबंदी के दौरान भी कई बार समाचार पत्रों की स्वतंत्रता पर हमले हुए हैं। समाचार पत्रों में लिखने से रोका गया है। उस दौरान भी यह स्थिति रही कि समाचार पत्रों से संपादको को हटाकर सत्ताधारी दल के पदाधिकारियों को कमान सौंप दी गई, लेकिन इसके बावजूद भी कई संपादक ऐसे रहे, जिन्होंने पत्रकारिता का वजूद बचाए रखा।

वरिष्ठ पत्रकार शिव अनुराग पटैरिया ने कहा कि पत्रकार और पत्रकारिता के सामने आज विष्वसनीयता का बड़ा संकट खड़ा हुआ है। पहले पत्रकार एवं नेता-अफसरों में विश्वास का अभाव नहीं था। कई मौकों पर वे पत्रकारों के सामने ही गोपनीय बातें करते थे, लेकिन वे कभी भी समाचार पत्रों में नहीं छपती थी। उन्होंने कहा कि कई मौके ऐसे आए जब उनके सामने ही कई बेहद गोपनीय बातें की गईं, लेकिन आज के समय में नेता, मंत्री, अफसर पत्रकारों से परदादारी करते हैं। वरिष्ठ पत्रकार सतीश एलिया ने कहा कि पत्रकारिता का निजाम बदला हुआ है। पहले के दौर की पत्रकारिता कुछ और थी, लेकिन वर्तमान दौर पत्रकार और पत्रकारिता के लिए बेहद चुनौतीपूर्ण दौर है। वरिष्ठ पत्रकार जयदीप कार्णिक ने कहा कि आज डिजिटल प्लेटफार्म ने पत्रकारिता को समेटकर रख दिया है। पत्रकारिता बाजारवाद की तरफ बढ़ गई है, लेकिन इसके बाद भी ऐसे संपादक आज भी है जो गरीबों, देशहित से जुड़ी खबरों को पूरी तवज्जों देते हैं। वरिष्ठ पत्रकार हेमंत शर्मा ने कहा कि आने वाले समय में संपादक सिर्फ नाम और पद के रहेंगे, क्योंकि आगे की पत्रकारिता का दौर कुछ और होगा। उन्होंने कहा कि मंच पर बैठी संपादको की पीढ़ी शायद अच्छे संपादको की आखिरी पीढ़ी हो, क्योंकि अब ऐसे संपादक शायद ही कभी मिल पाएं। वरिष्ठ पत्रकार प्रकाश हिन्दुस्तानी ने भी संपादक चौपाल में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि संपादकों का वह दौर अब समाप्ति की ओर है। संपादक अब सिर्फ पद, नाम के ही रहेंगे। रघु ठाकुर ने कहा पत्रकारों से हमारी अपेक्षाएं उतनी ही हो, जो व्यवहारिक हो। समाज पत्रकारों से उम्मीद करता है, लेकिन समाज के अपने उत्तरदायित्व पूरे नहीं करता। इस दौरान मंच पर **प्रदेश के पूर्व डीजीपी एस के राउत** भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन जनसंपर्क के पूर्व संचालक लाजपत आहूजा ने किया।

नेता, अधिकारियों, मंत्रियों से ज्यादा ताकतवर मीडिया है: फूलबासन देवी

- हमारे देश की दो बड़ी आबादी एक-दूसरे को समझने में नाकाम हुई: मौलाना सोहेब कासमी

- जन-संवाद चौपाल का आयोजन

भोपाल। मीडिया महोत्सव के दौरान **जन-संवाद चौपाल में पद्मश्री अवार्ड विजेता फूलबासन देवी** ने कहा है कि आज भी नेता, अधिकारी और मंत्रियों से ज्यादा हमारे देश की मीडिया ताकतवर है। मीडिया की ही देन है कि वे आज इस मुकाम पर पहुंची हैं। उन्होंने कहा कि मैं छत्तीसगढ़ के ऐसे क्षेत्र में निवास करती थीं, जहां अशिक्षा, गरीबी, भूखमरी थी। मैंने भी अपना बचपन बेहद गरीबी में बिताया। बचपन में ही परिवार वालों ने शादी कर दी। शादी के बाद ससुराल गईं तो वहां भी गरीबी देखने को मिली, लेकिन मैंने अपना हौंसला नहीं छोड़ा और लगातार संघर्ष करती रही। उन्होंने कहा कि जहां चाह होती है वहां राह निकल आती है। मैंने महिलाओं के लिए कदम आगे बढ़ाए तो ससुराल वालों, पति ने भी विरोध किया। कई बार मुझे मार भी खानी पड़ी, गांव वालों का तिरस्कार भी झेलना पड़ा, लेकिन मन में ठान लिया था कि कुछ करना है। फूलबासन बाई ने कहा कि मैं पढ़ी-लिखी बिल्कुल भी नहीं हूं, लेकिन आज 1681 गांवों में 13144 महिला स्व-सहायता समूह चला रही हूं। इन समूहों में 2 लाख से ज्यादा महिलाएं जुड़ी हुई हैं। उन्होंने कहा कि यदि प्रत्येक व्यक्ति एक घंटा समाज के लिए समर्पित कर दे तो इस समाज की दशा और दिशा दोनो ही बदल जाए। फूलबासन बाई छत्तीसगढ़ सरकार में कई पदों पर भी रहीं है, लेकिन उन्होंने सरकार से कभी भी कोई सुविधा नहीं ली। वे कहती हैं कि

यदि सुविधाएं ले लेती तो मुझे सरकार के सामने झुकना पड़ता, इसलिए मैंने कभी भी कोई सुविधाएं स्वीकार नहीं की। फूलबासन बाई ने पूरे समय छत्तीसगढ़ी बोली में ही अपनी बात कही।

दिल्ली से आए **मौलाना सोहेब कासमी** ने कहा कि हमारे देश में हमेशा से ही फूट डालो और शासन करो की नीति अपनाई जाती रही है। यही नीति देश की दो बड़ी आबादी के साथ भी अपनाई गई, इसीलिए वे एक-दूसरे को समझने में नाकाम हुए हैं। यह स्थिति 1947 के बाद से अब तक लगातार बनी हुई है। हमारे देश की बड़ी ताकतों ने हमेशा से इन्हें लड़वाने का कार्य किया है। उन्होंने कहा कि मैंने 100 से अधिक देशों की यात्राएं की हैं और सभी देशों में मैंने कई मुस्लिम समुदाय के लोगों से मेल-मुलाकात की है, लेकिन भारत की स्थिति इन सभी देशों से एकदम अलग है। मौलाना सोहेब कासमी ने कहा है कि हमारे देश में वर्तमान में जो हालात बने हुए हैं, उन्हें समझाने में कहीं न कहीं मीडिया की असफलता मानना चाहिए। मीडिया सही दिशा में लोगों को समझाने में नाकाम साबित हुआ है। वे बोले कि आज दिल्ली के कई क्षेत्रों में मुस्लिम समुदाय के युवा, बुजुर्ग, महिलाएं, लड़कियां बड़ी संख्या में धरना-प्रदर्शन कर रहे हैं, लेकिन जब उनसे पूछो कि वे यहां क्यों आए हैं तो उन्हें मालूम ही नहीं है। यह स्थिति क्यों बनी? उन्होंने कहा कि उनके पिताजी जनसंघ से जुड़े रहे हैं। उन्होंने ने भी इंद्रेश जी से कई बातें सीखी हैं। उन्होंने कहा कि आज **देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी** ने जिन मुद्दों को बेहद सरलता एवं आसानी के साथ हल कर दिया है, जिनमें चाहे कश्मीर का मुद्दा हो, अयोध्या का राममंदिर निर्माण का मामला हो या अन्य मुद्दे। इन मुद्दों पर देश में वर्षों से राजनीति होती आई है। उन्होंने कहा कि राष्ट्र निर्माण के लिए सभी को आगे आना चाहिए, चाहे वे हिन्दू हो या फिर मुसलमान हो।

डिजिटल मीडिया का कानून बनना चाहिए, तभी रुकेगा इसका दुरुपयोग

- मीडिया महोत्सव के दौरान हुई डिजिटल मीडिया चौपाल में वक्ताओं ने रखी अपनी बात

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय के सहयोगात्मक गतिविधियों की श्रंखला के अंतर्गत स्पंदन (शोध, जागरूकता एवं कार्यक्रम क्रियान्वयन संस्थान), राष्ट्रीय सुरक्षा जागरण मंच, प्रजातंत्र, स्वदेश समाचार-पत्र समूह, दिव्य प्रेम सेवा मिशन, स्वास्थ्य भारत, एवेंटूली, द सोसिओ कम्युनिकेशन, विवेकानंद केंद्र द्वारा संग्रहालय में "भारत का अभ्युदय: मीडिया की भूमिका" पर केन्द्रित 02 दिवसीय "मीडिया महोत्सव-2020" के दूसरे दिन के पहले सत्र में डिजिटल मीडिया चौपाल का आयोजन किया गया। इस दौरान मंच पर मौजूद वक्ताओं ने अपनी-अपनी बात रखी। ज्यादातर सवाल सोशल मीडिया के दुरुपयोग को लेकर सामने आए। इसमें सभी ने मिलकर डिजिटल कानून बनाने की बात पुरजोर तरीके से उठाई।

इस अवसर पर अमर उजाला डिजिटल से जयदीप कार्णिक ने कहा कि वर्तमान पीढ़ी पर डिजिटल और सोशल मीडिया का सामाजिक और मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ा है। सोशल मीडिया ने हम सभी को पूरी तरह से जकड़ लिया है। वह 24 घंटे हमारे साथ रहता है। उन्होंने कहा कि कोई भी नई तकनीक जब आती है तो उसका सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही तरह के प्रभाव पड़ते हैं। तो वहीं भास्कर डिजिटल के संपादक श्री अनुज खरे ने कहा कि आप अपने सोशल मीडिया पर तो असली होते हैं, लेकिन क्या आप अपने अलावा अन्य सोशल मीडिया पर भी सही होते हैं? उन्होंने कहा कि हमें सोशल मीडिया पर कोई भी सामग्री देने से पहले उसका पूरी तरह से परीक्षण करना चाहिए, लेकिन हम ऐसा नहीं करते हैं। कोई भी सामग्री आई और हम उसे तुरंत आगे बढ़ा देते हैं। उन्होंने कहा कि आज डिजिटल के लिए कानून की सख्त जरूरत है, तभी इसका दुरुपयोग रुक सकेगा। उन्होंने कहा कि फेसबुक दुनिया की सबसे बड़ी मीडिया कंपनी बनना चाहती थी, लेकिन वह अपनी विश्वसनीयता कायम नहीं रख सका और इसलिए उसका सबसे बड़ी मीडिया कंपनी बनने का सपना पूरा नहीं हुआ। आम आदमी पार्टी के श्री अंकित लाल ने कहा कि डिजिटल के नियम-कानून में हम बहुत पीछे चल रहे हैं। हमें अब इसके कानून की तरफ कदम उठाना चहिए, ताकि इसके दुरुपयोग को रोक सके। डिजिटल एक लोकतांत्रिक मीडिया बनाने का मौका भी देता है और इसकी तरफ आगे बढ़ना चाहिए।

राजस्थान से आए श्री आशीष खंडेलवाल ने कहा कि सोशल मीडिया से बड़ा तबका जुड़ा हुआ है। सोशल मीडिया के माध्यम से वह अपनी बात सरकार एवं उचित प्लेटफार्म तक पहुँचा सकता है। सोशल मीडिया ऐसे लोगों के बेहतर

जनसंचार का साधन है, जो अपनी परेशानियां या अपनी कोई बात सरकार तक पहुंचाना चाहते हैं, क्योंकि कई बार वे अपनी परेशानियों से लड़ते रहते हैं, लेकिन वे अपनी बात नहीं पहुंचा पाते हैं। उन्होंने कहा कि हमारे देश की 45 प्रतिशत जनता सोशल मीडिया के प्लेटफार्म फेसबुक, व्हाट्सअप, इंस्ट्राग्राम सहित अन्य माध्यमों से जुड़ी हुई है, लेकिन अभी भी 55 प्रतिशत जनता इनसे अछूती है, इसलिए सोशल मीडिया समाज में एक बेहतर माध्यम बनकर सामने आया है तो इसके कुछ नकारात्मक प्रभाव भी देखने को मिले हैं।

पत्रकार श्री सुभ्रांशु चोधरी ने कहा कि भारत को अपना खुद का डिजिटल मीडिया भी बनाना पड़ेगा। अमेरिका में 95 प्रतिशत लोग सोशल मीडिया एवं डिजिटल मीडिया से जुड़े हैं, लेकिन हमारे यहां सिर्फ 45 प्रतिशत लोग ही जुड़े हैं। उन्होंने कहा कि आगे की लड़ाई सायबर लड़ाई होगी।

आम आदमी पार्टी के अंकित पाल ने कहा कि सोशल मीडिया का उपयोग सबसे ज्यादा राजनीतिक पार्टियां ही करती हैं। 2014 के आम चुनाव में सोशल मीडिया का खूब उपयोग हुआ, लेकिन कई बार इसका गलत तरीके से भी उपयोग किया जाता है। उन्होंने कहा कि चुनाव के समय हम देखते हैं कि जमकर वीडियो वायरल होते हैं, लेकिन कई बार इन वीडियो को गलत तरीके से बनाकर वायरल किया जाता है। ये सोशल मीडिया का दुरूपयोग है और इनसे बचने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि सोशल मीडिया संचार का सबसे उपयुक्त माध्यम है तो इसका उपयोग सही दिशा में ही होना चाहिए, लेकिन इसका दुरूपयोग करना उचित नहीं है। डिजिटल चौपाल को विकास पांडे, जितेश जैन ने भी संबोधित किया। इस दौरान सवाल-जबाव का सिलसिला भी चला। उपस्थित मेहमानों से डिजिटल मीडिया से जुड़े हुए सवालों के जबाव जाने। इससे पहले मीडिया महोत्सव में खुला सत्र आयोजित किया गया, जिसमें सभी लोगों ने अपना-अपना परिचय दिया। इस दौरान कुछ लोगों ने अपने जीवन से जुड़ी हुई बातें बताईं तो किसी ने कविता भी सुनाई।

मानव संग्रहालय में मीडिया महोत्सव

गरीबी से जंग लड़कर दो लाख महिलाओं को बनाया आत्मनिर्भर

भोपाल ◆ मानव संग्रहालय में आयोजित दो दिवसीय मीडिया महोत्सव का समापन हो गया। जन चौपाल में पद्मश्री फूलबासन देवी ने कहा है कि आज भी नेता, अधिकारी और मंत्रियों से ज्यादा हमारे देश की मीडिया ताकतवर है। मीडिया की ही देन है कि वे आज इस मुकाम पर पहुंची हैं। उन्होंने कहा कि मैं छत्तीसगढ़ के ऐसे क्षेत्र में निवास करती थी, जहां अशिक्षा, गरीबी और भूखमरी थी। मैंने बचपन बेहद गरीबी में बिताया। बचपन में शादी हो गई। शादी के बाद ससुराल गई तो वहां भी गरीबी देखने को मिली, लेकिन हौसला नहीं छोड़ा और संघर्ष करती रही। मैंने महिलाओं के लिए कदम आगे बढ़ाए तो ससुराल वालों, पति ने भी विरोध किया। आज 1681 गांवों में

13,144 महिला स्व-सहायता समूह चला रही हूं। इनमें दो लाख से ज्यादा महिलाएं जुड़ी है। दिल्ली के मौलाना कासमी ने कहा कि हमारे देश में हमेशा से ही फूट डालो और शासन करो की नीति अपनाई जाती रही है। यही नीति देश की दो बड़ी आबादी के साथ भी अपनाई गई। इसीलिए वे एक-दूसरे को समझने में नाकाम हुए हैं। यह स्थिति 1947 के बाद से अब तक लगातार बनी हुई है। भारत की स्थिति अन्य देशों से एकदम अलग है।

प्रजातंत्र

इंदौर, सोमवार 24 फरवरी 2020

WWW.PRAJAATANTRA.COM

संपादक चौपाल ● वरिष्ठ वक्ताओं ने रखी बात, कहा-मीडिया हुई है दुर्दशा का शिकार

पत्रकारिता का स्वरूप भले बदला पर उसका महत्व हमेशा रहेगा

पत्रकारिता के क्षेत्र में आने वाला प्रत्येक व्यक्ति विशिष्ठ है, क्योंकि उसकी आत्मा जिंदा है। पत्रकारिता में भी समय के साथ-साथ कई परिवर्तन देखने को मिले हैं, लेकिन पत्रकारिता का अपना स्थान हमेशा से कायम था और आगे भी रहेगा। संपादक विचारों को प्रतिपादित करने वाली संस्था है। ये विचार मध्य प्रदेश के चुनिंदा संपादकों ने 'मीडिया महोत्सव' के अंतिम सत्र में व्यक्त किए।

ब्यूरो | भोपाल

मानव संग्रहालय में चल रहे मीडिया महोत्सव के अंतिम दिन संपादक चौपाल में कई वरिष्ठ संपादक उपस्थित थे। वरिष्ठ संपादक राजेंद्र शर्मा ने कहा कि गौरव ज्ञान उचित है, किंतु पुरानी ही परपंराओं का अनुसरण हो, यह बिल्कुल भी उचित नहीं है। उन्होंने कहा कि भारत समृद्ध इसीलिए रहा कि हमने किसी को बांधकर नहीं रखा। भारत ने दुनिया के सर्वश्रेष्ठ विचारों का हमेशा से स्वागत किया है। प्रलय से ही सृष्टि निर्माण की संभावना हमारे विचारों में है। उन्होंने कहा कि परिवर्तन समाज में व्यक्तियों में गुणों का संचार करता है। इस दौरान उन्होंने भगवान श्रीराम और श्रीकृष्णा के उदाहरण भी प्रस्तुत किए।

संपादकों का अस्तित्व खतरे में है - एनके सिंह

आज संपादकों के अस्तित्व पर ही खतरा मंडरा रहा है। ये पत्रकारिता के लिए बेहद खतरनाक है। आज की पत्रकारिता पूरी तरह से बाजारवाद पर आकर टिक गई है। हालांकि, पहले के दौर में भी कई बार संपादकों को अपना अस्तित्व बचाना पड़ा है, लेकिन वर्तमान दौर में पूरी तरह से खतरा है। ये बातें वरिष्ठ पत्रकार एवं दैनिक भास्कर, टाइम्स ऑफ़ इंडिया सहित कई समाचार पत्रों में संपादक रह चुके एनके सिंह ने कहीं। उन्होंने कहा कि मीसाबंदी के दौरान भी कई बार समाचार पत्रों की स्वतंत्रता पर हमले हुए हैं। समाचार पत्रों में लिखने से रोका गया है। उस दौरान भी यह स्थिति रही कि समाचार पत्रों से संपादकों को हटाकर सत्ताधारी दल के पदाधिकारियों को कमान सौंप दी गई, लेकिन इसके बावजूद कई संपादक ऐसे रहे, जिन्होंने पत्रकारिता का वजूद बचाए रखा।

संपादक नाम की संस्था को बचाना जरूरी - हेमंत शर्मा

'प्रजातंत्र' और 'फर्स्ट प्रिंट' के प्रधान संपादक हेमंत शर्मा ने कहा कि आने वाले समय में संपादक सिर्फ नाम और पद के रहेंगे, क्योंकि आगे की पत्रकारिता का दौर कुछ और होगा। उन्होंने कहा कि मंच पर बैठी संपादकों की पीढ़ी शायद अच्छे संपादकों की आखिरी पीढ़ी हो, क्योंकि अब ऐसे संपादक शायद ही कभी मिल पाएं। पूरी दुनिया में मीडिया का स्वरूप बदल रहा है, ऐसे में संपादक नाम की संस्था को बचाना बहुत जरूरी है। उन्होंने विदेशी मीडिया के कुछ उदाहरण भी दिए। सोशल मीडिया से पत्रकारिता में चुनौतियां बढ़ी हैं और अखबारों में अब वायरल खबरें जगा लेने लगी हैं, इनकी प्रमाणिकता और सत्यता पर काम होना जरूरी है।

संपादक विचारों को प्रतिपादित करने वाली संस्था है

संपादक चौपाल को संबोधित करते हुए प्रजातंत्र और फर्स्ट प्रिंट के प्रधान संपादक हेमंत शर्मा।

बाजारवाद की तरफ बढ़ गई है पत्रकारिता - जयदीप कर्णिक

अमर उजाला डिजिटल के संपादक जयदीप कर्णिक ने कहा कि आज डिटिजल प्लेटफार्म ने पत्रकारिता को समेटकर रख दिया है। पत्रकारिता बाजारवाद की तरफ बढ़ गई है, इसके बाद भी आज ऐसे संपादक हैं, जो गरीबों, देशहित से जुड़ी खबरों को पूरी तवज्जो देते हैं। वरिष्ठ पत्रकार प्रकाश हिन्दुस्तानी ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि संपादकों का वह दौर अब समाप्ति की ओर है। संपादक अब सिर्फ पद, नाम के ही रहेंगे।

समाज पत्रकारों से उम्मीद करता है, दायित्व नहीं निभाता - ठाकुर

समाजवादी नेता रघु ठाकुर ने कहा पत्रकारों से हमारी अपेक्षाएं उतनी ही हों, जो व्यवहारिक हों। समाज पत्रकारों से उम्मीद करता है, लेकिन समाज के अपने उत्तरदायित्व पूरे नहीं करता। इस दौरान मंच पर प्रदेश के पूर्व डीजीपी एसके राउत भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन जनसंपर्क के पूर्व संचालक लाजपत आहूजा ने किया। दो दिन तक चले इस मीडिया महोत्सव में 'प्रजातंत्र' मीडिया पार्टनर था।

पत्रकारिता में आज विश्वसनीयता का बड़ा संकट - शिव अनुराग पटेरिया

वरिष्ठ पत्रकार शिव अनुराग पटैरिया ने कहा कि पत्रकार और पत्रकारिता के सामने आज विश्वसनीयता का बड़ा संकट खड़ा हुआ है। पहले पत्रकार एवं नेता-अफसरों में विश्वास का अभाव नहीं था। कई मौकों पर वे पत्रकारों के सामने ही गोपनीय बातें करते थे, लेकिन वे कभी भी समाचार पत्रों में नहीं छपती थीं। उन्होंने कहा कि कई मौके ऐसे आए, जब उनके सामने ही कई बेहद गोपनीय बातें की गईं, लेकिन आज के समय में नेता, मंत्री, अफसर पत्रकारों से परदादारी करते हैं। वरिष्ठ पत्रकार सतीश एलिया ने कहा कि पत्रकारिता का निजाम बदला हुआ है।

जन संवाद चौपाल भी हुई

मीडिया महोत्सव के दौरान जन-संवाद चौपाल में पद्मश्री अवार्ड विजेता फूलबासन देवी ने कहा है कि आज भी नेता, अधिकारी और मंत्रियों से ज्यादा हमारे देश की मीडिया ताकतवर है। मीडिया की ही देन है कि वे आज इस मुकाम पर पहुंची है। उन्होंने कहा कि मैं छत्तीसगढ़ के ऐसे क्षेत्र में निवास करती थी, जहां अशिक्षा, गरीबी, भुखमरी थी। मैंने भी अपना बचपन बेहद गरीबी में बिताया। बचपन में ही परिवार वालों ने शादी कर दी। दिल्ली से आए मौलाना सोहेब कासमी ने कहा कि हमारे देश में हमेशा से ही फूट डालो और शासन करो की नीति अपनाई जाती रही है। यही नीति देश की दो बड़ी आबादी के साथ भी अपनाई गई, इसीलिए वे एक-दूसरे को समझने में नाकाम हुए हैं। यह स्थिति 1947 के बाद से अब तक लगातार बनी हुई है। हमारे देश की बड़ी ताकतों ने हमेशा से इन्हें लड़वाने का कार्य किया है। उन्होंने कहा कि मैंने 100 से अधिक देशों की यात्राएं की हैं और सभी देशों में मैंने कई मुस्लिम समुदाय के लोगों से मेल-मुलाकात की है, लेकिन भारत की स्थिति इन सभी देशों से एकदम अलग है। उन्होंने कहा कि हमारे देश में वर्तमान में जो हालात बने हुए हैं, उन्हें समझाने में कहीं न कहीं मीडिया की असफलता माननी चाहिए। मीडिया सही दिशा में लोगों को समझाने में नाकाम साबित हुआ है।

मीडिया महोत्सव - मनोरंजन और व्यंजन चौपाल